ज्ञानदीप

(त्रैमासिक सूचना पत्र)

भारतीय रेल सिविल इंजीनियरी संस्थान, पुणे - 411 001

आई. एस. ओ. : 9001 प्रमाणित भारतीय रेल का प्रथम प्रशिक्षण संस्थान

संस्थान - डी ओ टी (020) 26122271, 26123436, 26123680, 26111554
रेलवे - 5222, 5860, 5862

छात्रावास - डी ओ टी (020) 26130579, 26126816, 26121669
रेलवे - 5896, 5897, 5898

फैक्स : 020-26128677
ई-मेल : mail@iricen.gov.in
टेलीग्राम : रेलपथ
वेब साइट : www.iricen.gov.in

वर्ष - 8 | अंक - 32 | अक्तूबर-दिसम्बर 2004

ज्ञान ज्योति से मार्गदर्शन TO BEAM AS A BEACON OF KNOWLEDGE

इस अंक में

1) हमारे नए निदेशक
2) मुख्य रेल पथ इंजीनियरों का सेमिनार
3) राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 85 वीं बैठक
4) फील्ड पाठ्यक्रम
5) आई.पी.डब्ल्यू.ई.(आई.) के अंतर्गत गतिविधियां
6) सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन
7) मुख्य पुल इंजीनियरों का सेमिनार
8) सलाहकार समिति की बैठक
9) विदाई
10) स्वागत
11) बधाई/शुभकामनाएं
12) आपके पत्र
13) सृजन

अपने समस्त पाठकों, शुभचिंतकों, सहयोगियों तथा रचनाकारों को नूतन वर्ष 2005 की हार्दिक शुभकामनाएं

- ज्ञानदीप परिवार

1 हमारे नए निदेशक -

श्री शिव कुमार ने दि. 25 नवंबर को संस्थान के निदेशक का पदभार ग्रहण कर लिया । इसके पूर्व आप जून 2002 से रेल मंत्रालय के सलाहकार (सतर्कता) / मुख्य सतर्कता अधिकारी के रूप में कार्यरत थे ।

13 जुलाई 1950 को जन्मे श्री शिवकुमार ने 1971 में दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग से बी.एस.सी. (सिविल इंजीनियरी) की उपाधि ऑनर्स के साथ प्राप्त की । आपने वर्ष 1972 में भारतीय रेल इंजीनियरी सेवा में प्रवेश किया । सेवा काल में आपने मास्टर्स ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन तथा मास्टर्स डिप्लोमा इन पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन किया । आपको विभिन्न क्षेत्रीय रेलों, अनुसंधान अभिकल्प एवं मानक संगठन, लखनऊ तथा रेलवे स्टॉफ कालेज, वडोदरा में विविध महत्वपूर्ण पदों पर कार्य करने का विशेष एवं गहन अनुभव प्राप्त है । आप मुख्य पुल इंजीनियर / उत्तर रेलवे, मंडल रेल प्रबंधक / सोनपुर, पूर्वोत्तर रेलवे, अपर मंडल रेल प्रबंधक, मुंबई, मध्य रेलवे, मंडल अधीक्षण इंजीनियर, इलाहाबाद / उत्तर रेलवे के रूप में कार्य कर चुके हैं । मोजामबिक रेलवे पर प्रतिनियुक्ति पर कार्य करने के अलावा आपने क्वींसलेंड रेलवे, आस्ट्रेलिया में हैवी हॉल आपरेशन्स का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया है ।



श्री शिवकुमार

पुल वर्कशॉप, जालंधर कैंट, उत्तर रेलवे में आइ.एस.ओ. - 9002 गुणवता प्रणाली के कार्यान्वयन में आपकी विशेष भूमिका रही है । आपके अनेक तकनीकी लेख भी प्रकाशित हो चुके हैं ।

संस्थान आपका हार्दिक स्वागत करता है ।

2 मुख्य रेल पथ इंजीनियरों का सेमिनार -

संस्थान में दि. 5 से 7 अक्तूबर तक मुख्य रेल पथ इंजीनियरों का सेमिनार आयोजित किया गया, जिसका उद्घाटन श्री बुध प्रकाश, अपर सदस्य (सिविल इंजीनियरी), रेलवे बोर्ड ने किया । इस सेमिनार में क्षेत्रीय रेलों द्वारा

संरक्षक
शिवकुमार
निदेशक
भा.रे.सि.इं.सं., पुणे

मुख्य संपादक
प्रवीण कुमार
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं प्राध्यापक - कंप्यूटर्स

संपादक
विपिन पवार
राजभाषा सहायक
ग्रेड I

सहयोग
अरूण चांदोलीकर
सह प्राध्यापक
श्रीमती अरूणाभा ठाकुर, राजभाषा अधीक्षक
आर. जे. पाल, रा. भा. स. II

प्रस्तावित मदों पर विचार-विमर्श किया गया तथा क्षेत्रीय रेलों ने रेल पथ से संबंधित विभिन्न विषयों पर प्रस्तुतीकरण भी दिए । सेमिनार में क्षेत्रीय रेलों, रेलवे बोर्ड तथा अ.अ.मा.सं. से 27 अधिकारियों ने भाग लिया ।

3 राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 85 वीं बैठक -

संस्थान में दि. 21 अक्तूबर को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 85 वीं बैठक संपन्न हुई, जिसमें दि. 30 सितंबर 2004 को समाप्त तिमाही की अवधि की हिंदी प्रगति की समीक्षा की गई ।

4 फील्ड पाठ्यक्रम -

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण), पूर्व मध्य रेलवे, हाजीपुर के अनुरोध पर संस्थान द्वारा दि. 25 से 27 अक्तूबर तक पटना में ''सर्वेइंग विद टोटल स्टेशन'' पर विशेष पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें पू.म.रे. के 40 अधिकारियों / पर्यवेक्षकों ने भाग लिया । इसी प्रकार उत्तर मध्य रेलवे, इलाहाबाद के अनुरोध पर संस्थान द्वारा 18 एवं 19 नवंबर को सिविल इंजीनियरी प्रशिक्षण अकादमी, कानपुर में ''रेल फ्रैक्चर एवं यू.एस.एफ.डी.'' पर विशेष पाठ्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें 31 अधिकारियों / पर्यवेक्षकों की उपस्थिति रही । दोनों फील्ड पाठ्यक्रमों का फीड बैक बहुत अच्छा रहा ।

5 आई.पी.डब्ल्यू.ई.(आई.) के अंतर्गत गतिविधियां -

इन्स्टीट्यूशन ऑफ परमनेंट वे इंजीनियर्स (इंडिया) पुणे चैप्टर के तत्वावधान में इस तिमाही में निम्नलिखित प्रस्तुतीकरण दिए गए :-

- ''दि मेंटोरिंग प्रोसेस'' - श्री अशोक कुमार यादव, वरिष्ठ प्राध्यापक (पुल)/(प्रशिक्षण) द्वारा
- ''ग्रीन बिल्डिंग्स'' - श्री अभय कुमार राय, प्राध्यापक (कार्य) द्वारा

6 सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन -

संस्थान में दि. 1 से 5 नवंबर तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया । उद्घाटन के दिन दि. 1 नवम्बर को संस्थान के पूर्व निदेशक श्री ए. के. गोयल ने उपस्थित अधिकारियों तथा कर्मचारियों को प्रतिज्ञा दिलवाई, तत्पश्चात संकाय अध्यक्ष श्री अजीत पंडित द्वारा महामहिम राष्ट्रपति तथा महामहिम उप राष्ट्रपति एवं सह प्राध्यापक श्री अरूण चांदोलीकर द्वारा माननीय प्रधानमंत्री एवं मुख्य सतर्कता आयुक्त के संदेश का वाचन किया गया । सप्ताह के समापन पर दि. 04 नवंबर को एक सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें प्रशिक्षु अधिकारी श्री सुसीम कुमार दत्ता, सहायक इंजीनियर (निर्माण), पूर्व रेलवे, श्री ए.क्रिस्टोफर, सहायक कार्यकारी इंजीनियर, दक्षिण रेलवे, श्री रवींद्र शर्मा, कार्यकारी इंजीनियर (निर्माण), पश्चिम मध्य रेलवे, भोपाल, श्री हरपाल सिंह, कार्यकारी इंजीनियर (निर्माण), दिल्ली, श्री अनिल कुमार तिवारी, मंडल इंजीनियर (मध्य), प.म.रे, भोपाल, संस्थान के सहायक मंडल वित्त प्रबंधक श्री ए. बी. राणा, प्राध्यापक (पुल), श्री सुधांशु शर्मा, संकाय अध्यक्ष श्री अजीत पंडित तथा पूर्व निदेशक श्री ए. के. गोयल ने अपने विचार व्यक्त किए । आभार प्रदर्शन श्री अरुण चांदोलीकर, सह प्राध्यापक ने किया। कार्यक्रम का संचालन राजभाषा सहायक ग्रेड - I, श्री विपिन पवार ने किया ।



(चित्र में सेमिनार का एक दृश्य)

7 मुख्य पुल इंजीनियरों का सेमिनार -

संस्थान में दि. 24 से 25 नवंबर तक मुख्य पुल इंजीनियरों का सेमिनार सम्पन्न हुआ, जिसमें क्षेत्रीय रेलों से 15 अधिकारियों ने भाग लिया ।

8 सलाहकार समिति की बैठक -

दि. 29 नवंबर को श्री बुध प्रकाश, अपर सदस्य (सिविल इंजीनियरी), रेलवे बोर्ड की अध्यक्षता में संस्थान की सलाहकार समिति की बैठक हुई, जिसमें अगले वर्ष 2005 के कैलेंडर ऑफ कोर्स को अंतिम रूप दिया गया और महत्वपूर्ण कार्यों की समीक्षा की गई ।

9 विदाई -

संस्थान के पूर्व निदेशक श्री ए. के. गोयल दि. 17 नवंबर को स्थानांतरित होकर प्रधान मुख्य इंजीनियर, पश्चिम रेलवे के पद पर तैनात हो गए हैं । संस्थान आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है ।



श्री ए. के. गोयल

10 स्वागत -

❊ संस्थान के प्राध्यापक - (कंप्यूटर्स), श्री प्रवीण कुमार ने दि. 17 दिसंबर से उप मुख्य राजभाषा अधिकारी का कार्यभार ग्रहण कर लिया है । संस्थान आपका हार्दिक स्वागत करता है ।



श्री प्रवीण कुमार


श्री एन. आर. काले

❊ श्री एन. आर. काले ने दि. 29 नवंबर से संस्थान के सहायक कार्यकारी इंजीनियर-I का कार्यभार ग्रहण कर लिया है । संस्थान आपका हार्दिक स्वागत करता है । इससे पूर्व आप वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर (रेलपथ)-I, पश्चिम रेलवे, आनंद के रूप मे कार्यरत थे ।

❊ श्री एस. ए. शिंदे ने दि. 27 दिसंबर से संस्थान के तकनीकी सहायक (प्रयोगशाला) का कार्यभार ग्रहण कर लिया है । संस्थान आपका हार्दिक स्वागत करता है । इससे पूर्व आप सेक्शन इंजीनियर (रेलपथ), मध्य रेलवे, सोलापुर के रूप में कार्यरत थे ।

11 बधाई/शुभकामनाएं -

अधिकारियों को जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई -

20 फरवरी - श्री अभय कुमार राय, प्राध्यापक (कार्य)

अधिकारियों को विवाह वर्षगांठ पर हार्दिक बधाई -

22 फरवरी - श्री शिवकुमार, निदेशक

22 फरवरी - श्री सुधांशु शर्मा, प्राध्यापक (पुल)

कर्मचारियों को जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई -

01 फरवरी - श्री के. के. आयजेक, प्रवर लिपिक

05 फरवरी - श्री बबन मारुति, फिटर, ग्रेड -III

08 फरवरी - श्री फ्रांसिस जॉन गोपालन, खलासी

09 फरवरी - श्री राजू जे. पाल, राजभाषा सहायक -II

10 फरवरी - श्री गौस मौहम्मद, खलासी

13 फरवरी - श्री अतुल ना. घोड़ेकर, छात्रावास अधीक्षक-I

28 फरवरी - श्री जे. एस. शेट्टी, कार्यालय अधीक्षक (स्थापना)

01 मार्च - श्री शिरीष मोरे, रेल पथ मेट

01 मार्च - श्री विलास तावड़े, खलासी

15 मार्च - श्री शांताराम पोपट, खलासी

16 मार्च - श्री संजय भोसले, खलासी

कर्मचारियों को विवाह वर्ष गांठ पर हार्दिक बधाई -

05 फरवरी - श्रीमती जयंती दंडपाणि, प्रधान लिपिक

06 फरवरी - श्री विपिन पवार, राजभाषा सहायक -I

13 फरवरी - श्रीमती चारुशीला ननावरे, वरिष्ठ चपरासी

19 फरवरी - श्रीमती अरुणाभा ठाकुर, राजभाषा अधीक्षक

19 फरवरी - श्री अतुल ना. घोड़ेकर, छात्रावास अधीक्षक-I

28 फरवरी - श्री के. पी. धुमाल, वैयक्तिक सहायक - संकाय अध्यक्ष

05 मार्च - श्री राजू जे. पाल, राजभाषा सहायक -II

07 मार्च - श्री दयानंद बारकोजी, खलासी

08 मार्च - श्री कृष्ण बहादुर, सहायक रसोईया

12 आपके पत्र

"ज्ञानदीप" का अंक अवलोकनार्थ प्राप्त हुआ । पत्रिका की उत्कृष्ट छपाई एवं "ज्ञान ज्योति से मार्गदर्शन" की भूरि - भूरि प्रशंसा के साथ संपादक मंडल को अशेष शुभकामनाएं। राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में आपके अमूल्य योगदान के प्रति हमें अतीव प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है । इस त्रैमासिक सूचना पत्र का नियमित प्रकाशन इस बात का द्योतक है कि आप हिंदी के प्रति समर्पित ही नहीं, बल्कि अपने कार्यक्षेत्र में हिंदी के उत्तरोत्तर विकास के लिए दृढ़ संकल्पित हैं ।

- सुश्री सुधा मिश्रा,
राजभाषा अधिकारी,
दक्षिण पूर्व रेलवे, खड़गपुर

संस्था का प्रकाशपूर्ण ज्ञानदीप निरंतर मिल रहा है । यह केवल सूचना पत्र न होकर सरकारी - गैर सरकारी संस्थाओं के लिए एक प्रभावकारी प्रेरणा पत्र है । इतने कम स्पेस में इतनी महत्वपूर्ण जानकारियां देना, अनुभवी हिंदी प्रेमी और सुलझे हुए अधिकारियों द्वारा ही संभव है । रेलवे ने पहले भी हिंदी प्रचार - प्रसार का ऐतिहासिक कार्य किया है । यह पत्र भी हिंदी को इतना श्रेष्ठ सम्मान देकर राष्ट्रभाषा को गौरव प्रदान कर रहा है । ज्ञानदीप परिवार के सभी सदस्य हार्दिक बधाई के पात्र हैं ।

जिस प्रकार आपका संस्थान ज्ञानदीप निकालकर अपनी संपूर्ण रेल गतिविधियों, नये प्रयोगों और कर्मचारियों की प्रगति की सूचना सबको देता है, इसी तरह रेलवे के अन्य संस्थानों को प्रेरणा लेकर ऐसा ही पत्र प्रकाशित करना चाहिए । प्रकाशन, संपादन, भाषा और विषय वस्तु की जितनी खूबियां ज्ञानदीप में हैं, वे अनुकरणीय है । गागर में सागर है । मैं "ज्ञानदीप" दिखाकर संस्थाओं को विश्वास दिलाता हूँ कि हिंदी की सेवा इस तरह भी कर सकते हैं । आशा है आप सब नई बुलंदियों को छूते रहेंगे । आप सबको सादर विनम्रता सहित नमन ।

- श्री सी. बी. कावजा,
पूर्व व्याख्याता (रेलवे), इटारसी

"ज्ञानदीप" की एक प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए आपको धन्यवाद । सूचना पत्र में प्रकाशित संस्थान संबंधी गतिविधियों का विवरण उपयोगी है । इससे अन्य कार्यालयों को प्रेरणा मिलेगी । यह भी अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि इसमें राजभाषा संबंधी गतिविधियों का विवरण प्रमुखता से प्रकाशित किया गया है । इस उत्कृष्ट प्रयास के लिए हमारी बधाई स्वीकार करें ।

- श्री धीरेंद्र कुमार झा,
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी,
मध्य रेल, मुंबई

"ज्ञानदीप" एक अलौकिक आभा लिए हुए प्राप्त हुआ । संस्थान में राजभाषा प्रयोग - प्रसार के मील स्तंभ राजभाषा सहायक तथा संपादक "ज्ञानदीप" श्री विपिन पवार को सर्वोत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु स्वर्ण पदक प्रदान किए जाने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं । "ज्ञानदीप" ने सफलता

के जो सोपान तय किए हैं, उसके लिए निश्चित ही विपिन पवार के अथक प्रयासों को श्रेय दिया जाना चाहिए ।

इस अंक में रचनाओं का अभाव रहा । कृपया हर अंक में हिंदी की प्रतिनिधि रचनाओं को भी आवश्यक रूप से स्थान दें । पत्रिका के आकार को देखते हुए भले ही रचनाएं छोटी हों, परंतु उनकी प्रभावोत्पादकता कायम रहे । विभागीय रचनाकारों को प्राथमिकता देना स्वाभाविक है, लेकिन यदि विभाग पर केंद्रित कोई रचना प्राप्त होती है, तो मेरे विचार से उसको भी पत्रिका में स्थान देना उचित होगा । शेष आप पर ।

एक ऐसे स्तंभ की शुरुवात भी अपेक्षित है, जिसमें हिंदी के उन प्रचलित शब्दों का अर्थ स्पष्ट किया जाना चाहिए, जो रेलवे अथवा संस्थान द्वारा सार्वजनिक रुप से प्रयुक्त तो किए जाते हैं, परंतु आम आदमी की समझ से बाहर होते हैं । आशा है ध्यान देंगे । आभारी रहूंगा ।

- श्री विनोद कुशवाहा,
प्रान्तीय संयोजक,
मध्य प्रदेश जन चेतना लेखक संघ,
इटारसी (म.प्र.)

यह पत्रिका पढ़ने पर यह जान पड़ता है कि संस्थान के कर्मचारियों को एकत्रित करने मे पत्रिका सेतु का काम कर रही है । आपसे निरंतर पत्रिका प्राप्त करने की आशा रखते हैं ।

- श्री एम. सामसन संदीप,
सहायक निबंधक,
रेल दावा अधिकरण, सिकंदराबाद

13 सृजन (धारावाहिक लेख) -

भारतीय जनतंत्र, राजनीति और राजभाषा हिंदी का सवाल

श्रीमती सरला माहेश्वरी,
उपाध्यक्ष,
संसदीय राजभाषा समिति,
11, तीन मूर्ति मार्ग, नई दिल्ली

कोई भी राष्ट्र सिर्फ भूगोल नहीं होता । उसकी पहचान उसकी भौगोलिक सीमाएं, नदी-नाले, पहाड़ मात्र नहीं होते। राष्ट्र की एक बड़ी पहचान उसके नागरिक होते हैं, उनकी भाषा, उनकी संस्कृति और उनका पूरा मनोविज्ञान होता है। एक निश्चित भूखंड पर पारस्परिक साझा सामाजिक आर्थिक हितों से जुड़े हुए एक भाषा और संस्कृति के वाहक नागरिकों से ही राष्ट्र का निर्माण होता है । संस्कृति के अन्य तमाम पक्षों में भाषा की एक बहुत ही अहम भूमिका होती है । इसीलिए अक्सर राष्ट्रों की पहचान उनकी राष्ट्रीय भाषाओं से ही की जाती है । यद्यपि, दुनिया में अनेक ऐसे देश हैं जिनकी एक से अधिक राष्ट्रीय भाषाएं हैं ।

इस दृष्टि से देखने पर भारत को आज भी हम एक बहुभाषी और बहुराष्ट्रीय देश कह सकते हैं । हमारे संविधान में भी 18 भाषाओं को स्वीकृति मिली हुई है । जहां तक एक राष्ट्रभाषा का सवाल है, हमारे संविधान में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रुप में स्वीकारा गया है । लेकिन जहां तक राजकाज के लिए भाषा का सवाल है, वहां हिंदी के साथ ही अंग्रेजी का भी उल्लेख किया गया है । संविधान में अंग्रेजी का यह स्थान हमारे देश को औपनिवेशिक शासन की विरासत है । भारत में बमुश्किल दो प्रतिशत लोग भी अंग्रेजी में काम नहीं कर पाते हैं । इसके बावजूद 200 वर्षों के बिट्रिश राज की बदौलत अंग्रेजी शासन की भाषा बन गयी और जब आजाद भारत के संविधान का निर्माण किया जा रहा था तब इस यथार्थ परिस्थिति को देखते हुए ही कि देश के एक कोने से दूसरे कोने तक प्रशासन के कामों को चलाने के लिए अंग्रेजी की अहमियत से इंकार नहीं किया जा सकता, हमारे संविधान में यह व्यवस्था की गयी कि आने वाले 15 वर्षों में राजकाज के कामों के लिए हिंदी के प्रसार को बढ़ावा देकर ऐसी परिस्थितियां बनाई जायेंगी जिससे भारत के प्रशासनिक कामों के लिए अंग्रेजी की कोई जरुरत न रह जाए और राष्ट्रभाषा हिंदी राजभाषा के रुप में भी अपनी भूमिका को बखूबी निभा सकेगी ।

राजभाषा के मामले में भारत का अनुभव दूसरे देशों से बहुत भिन्न नहीं रहा है । अन्य देशों में भी अक्सर राजा - महाराजाओं के काल में और औपनिवेशक गुलामी के दिनों में भी जनता की भाषा एक रही है तथा शासकों की भाषा दूसरी । अति प्राचीन काल से भारत मे कभी भी जनभाषा राजभाषा का स्थान नही ले पायी । भारत की राजभाषा के रूप में संस्कृत, फारसी और अंग्रेजों के काल में अंग्रेजी कभी भी जनभाषाएं नहीं रही है । लेकिन दुनिया का इतिहास इस बात का भी गवाह है कि जैसे - जैसे सामंतशाही समाप्त होती चली गयी, राजा - महाराजाओं के राज उजड़ते चले गये और औपनिवेशिक गुलामी का अंत होता चला गया तथा स्वतंत्रता, जनतंत्र और समानता के आधार पर राष्ट्रों के पुनर्गठन की प्रक्रिया शुरु हुई, उसके साथ ही राष्ट्रभाषा और राजभाषा के बीच का फर्क मिटता चला गया । जनता की भाषा ही राज - काज की भाषा के रुप में स्वीकृति पाने लगी ।

यथार्थ की इसी समझ और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की इन्हीं भावनाओं के आधार पर हमारे संविधान निर्माताओं ने जब एक स्वतंत्र और लोकतांत्रिक भारत के संविधान की रचना की, तभी उन्होंने तय किया कि आने वाले 15 वर्षों में राष्ट्रभाषा और राजभाषा के बीच के फर्क को खत्म कर दिया जाएगा । अंग्रेजी अन्य विदेशी भाषाओं की तरह ही पठन - पठन तथा ज्ञान - विज्ञान के क्षेत्र में तो प्रयुक्त होती रहेगी, लेकिन राजकाज के कामों से इसका कोई संबंध नहीं होगा।

- शेष आगामी अंक में

प्रवीण कुमार, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्राध्यापक, कंप्यूटर्स, भारतीय रेल सिविल इंजीनियरी संस्थान, पुणे-1 द्वारा केवल सीमित निशुल्क वितरण हेतु प्रकाशित एवं मेसर्स **एम आर एंड कंपनी** 1552, चिमणबाग, सदाशिव पेठ, पुणे 411 030 फोन 2433 0449 द्वारा मुद्रित। (500 प्रतियां)